

बढ़ रही है सांस रुकने की बीमारी

मुंबई (वार्ता) : बच्चों में बढ़ती मोटापे की समस्या से उनमें खरटि लेने की बीमारी भी बढ़ रही है। एक अनुमान के मुताबिक देशभर में 8 से 12 फीसदी बच्चे खरटि और सांस में दिक्कत की बीमारी ऑब्स्ट्रक्टिव स्लीप एनीमिया (ओएसए) से पीड़ित हैं।

नाक-कान-गला विशेषज्ञ डॉ. सुजाता एन. मुरंजन ने बताया कि ओएसए सिंड्रोम से पीड़ित बच्चों की सोने के दौरान बार-बार कुछ सेकंड के लिए सांस थम जाती है। यह स्थिति अचानक मौत का कारण भी बन सकती है। सोते वक्त सांस में दिक्कत से शरीर को ऑक्सिजन कम मिलती है। इससे खून में ऑक्सिजन लेवल घट जाता है। इसके कारण बच्चे का मानसिक विकास प्रभावित होता है। लंबे समय तक इसका इलाज न होने पर डिप्रेशन, चिड़चिड़ापन, सिरदर्द, हार्ट अटैक, हाई ब्लडप्रेसर और किडनी से

निशाने पर नौनिहाल

- ▶ मोटे बच्चों में स्लीप एनीमिया का खतरा ज्यादा
- ▶ समय पर पूरा इलाज न होने से मौत भी संभव
- ▶ मुंह से सांस लेने और खरटों से बढ़ती है बीमारी

संबंधित बीमारियां हो सकती हैं।

उन्होंने बताया कि इन दिनों फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक्स और वसा युक्त चीजों को ज्यादा खाने-पीने, और घंटों तक विडियो और कंप्यूटर गेम खेलने से बच्चों में मोटापे की समस्या बढ़ रही है। इस मोटापे के कारण खरटि और नींद की बीमारियां हो जाती हैं। खरटि लेने वाले 20 से 40 प्रतिशत तक मोटे बच्चे ओएसए सिंड्रोम से प्रभावित होते हैं। एक रिसर्च के मुताबिक अमूमन 10 में से 1 बच्चा

खरटि लेता है। बच्चों में खरटि और स्लीप एनीमिया की बीमारी मुख्य रूप से दिन में मुंह से सांस लेने और मां-बाप के खरटि लेने की बीमारी से पीड़ित होने की वजह से होती है।

अपोलो अस्पताल के सीनियर ईएनटी सर्जन डॉ. संदीप बताते हैं कि आमतौर पर ओएसए के लक्षण स्पष्ट नहीं होते लेकिन बच्चे का असंयमित अथवा उग्र व्यवहार, स्कूल में खराब प्रदर्शन, खरटि, मुंह से सांस लेने, बिस्तर गीला करने जैसे लक्षण ओएसए या नींद संबंधी बीमारी का संकेत हो सकते हैं। कई बच्चों में साइनुसाइटिस, टॉन्सिल या एनोनायड का बढ़ा होना भी इसकी वजह होती है। हार्ट स्पेशलिस्ट पद्मभूषण डॉ. पुरुषोत्तम लाल बताते हैं कि सोते वक्त ऑक्सिजन कम और कार्बन डाई ऑक्साइड ज्यादा मात्रा में मिलने से बच्चों के दिल और फेफड़ों का विकास सही तरह से नहीं होता।